पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.02.2016 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

आवश्यक कार्यकर्ता बैठक

रविवार, 21 फरवरी 2016
दोपहर 3 बजे
दयानन्द भवन, आसिफ अली रोड़,नई दिल्ली

—अनिल आर्य

वर्ष-32 अंक-16 फाल्गुन-2072 दयानन्दाब्द 191 16 फरवरी से 29 फरवरी 2016 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.02.2016, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

ओ३म्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

के तत्वावधान में

आर्य समाज के संस्थापक, समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी

192वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

शुक्रवार, 4 मार्च 2016, प्रातः 11:00 से 2:00 बजे तक

स्थान: स्पीकर हॉल, कान्स्टीट्यूशन क्लब

रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 (निकट मैट्रो स्टेशन पटेल चौक)

मुख्य अतिथि:

डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा
(अध्यक्ष, अखिल भारतीय खेल परिषद् (राज्य मंत्री स्तर)

श्रीमती शीला दीक्षित
(पूर्व मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार)

विशिष्ट अतिथि:

श्री श्याम जाजु
(राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी, भाजपा)

स्वामी आर्यवेश जी
(अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

अध्यक्षता: डॉ. अशोक कुमार चौहान

(संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

ध्वजारोहण
श्री मायाप्रकाश त्यागी
(कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा)

स्वागताध्यक्ष
ठाकुर विक्रम सिंह
(अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी)

मुख्य वक्ता
डॉ. जयेन्द्र आचार्य
(आचार्य, आर्ष गुरुकुल, नोएडा)

गरिमामयी उपस्थिति

श्री आनन्द चौहान (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)
श्री राजीव कुमार (निदेशक, परम डेयरी ग्रुप)
श्री प्रभात शेखर (मनोहर लाल ज्वेलर्स)
श्री नवीन रहेजा (रहेजा डेवैलपर)
चौ. लाजपतराय आर्य (करनाल)
डॉ. रिखबचन्द जैन (अध्यक्ष, टी. टी. ग्रुप)
श्री सुरेन्द्र कोहली (सुप्रसिद्ध समाज सेवी)
श्री ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मजिस्ट्रेट)

विशेष आमन्त्रित: गायत्री मीना, प्रि. अंजु महरोत्रा, रविदेव गुप्ता, रवि चड्डा, रविन्द्र मेहता, सुरेन्द्र गुप्ता अमरनाथ गोगिया, सोहनलाल मुखी, उर्मिला आर्या, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, विजयारानी शर्मा, विकास गोगिया अंजू जावा, मनोहरलाल चावला, राकेश ग्रोवर, ओमप्रकाश जैन, सुभाष चान्दना, राजेश आहुजा, राजेन्द्र खारी

जलपान: प्रातः 10:30 बजे

निवेदक

ऋषि लंगर: दोपहर 2:00 बजे

डॉ. अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष
9810117464

महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय महामन्त्री
9013137070

धर्मपाल आर्य
कोषाध्यक्ष
9711523412

दर्शन अग्निहोत्री
स्वागताध्यक्ष
9810033799

यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह, कृष्णचन्द पाहुजा, विश्वनाथ आर्य
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

दुर्गेश आर्य, देवेन्द्र भगत, राकेश भटनागर, सुभाष बब्बर
राष्ट्रीय मंत्री

आनन्दप्रकाश आर्य, सत्यभूषण आर्य, स्वतन्त्र कुकरेजा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

प्रबन्धक:
सौरभ गुप्ता-अरुण आर्य

प्रवीण आर्य, सुरेश आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, सुशील आर्य
राष्ट्रीय मंत्री

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9868661680

E-mail: aryayouthn@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com

Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

स्वामी दयानन्द प्राचीन ऋषियों की परम्परा वाले सच्चे ऋषि, संसार के सर्वोच्च गुरु एवं अपूर्व वेद-धर्म प्रचारक हैं

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हमारे लेख के शीर्षक से आर्यसमाज के अनुयायी तो प्रायः सभी सहमत होंगे परन्तु इतर बन्धु इस तथ्य को स्वीकार करने में संकोच कर सकते हैं। अतः अपने ऐसे बन्धुओं से हम प्रश्न करते हैं कि वह महर्षि दयानन्द से अधिक प्रतिभावान व योग्य ऋषि का नाम बतायें? दूसरा प्रश्न यह है कि महर्षि दयानन्द से उच्च कौन सा गुरु है जिसने संसार को धार्मिक विषयों सहित सभी प्रकार का सत्य ज्ञान दिया है? गुरु, ज्ञान व विद्या में पराकाष्ठा व उसका लाभ संसार के अधिक से अधिक लोगों में निःस्वार्थ भाव से वितरित करने वाले को कहते हैं। अज्ञानी, अल्पज्ञान व जिसकी बातें, विचार व सिद्धान्त भ्रान्तिपूर्ण हो वह विश्व गुरू तो क्या एक साधारण गुरु भी नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार से महाभारत काल के बाद के पांच हजार वर्षों में ऐसा कौन सा विद्वान हुआ जिसकी तुलना महर्षि दयानन्द से कर सकते हैं, जिसने उनकी तरह से वेदों की खोज की हो और उनके सत्य अर्थों को प्राप्त कर उसको अधिकतम लोगों तक पहुंचाने का पुरजोर प्रयास किया है। महर्षि दयानन्द जी का एक गुण और है जो उनके पूर्व व बाद के महापुरुषों सहित धार्मिक विद्वानों व धर्मगुरुओं में नहीं पाया जाता। वह उनका बाल ब्रह्मचारी होने के साथ सिद्ध योगी होना भी है। इन सब व अन्य अनेक गुणों के कारण वह संसार के सर्वश्रेष्ठ मानव व सर्वोच्च विश्व गुरु सिद्ध होते हैं।

महर्षि दयानन्द गुरु, ऋषि व वेदप्रचारक कैसे थे? इसका उत्तर है महर्षि दयानन्द के समय चार वेदों की मन्त्र संहितायें हिन्दुओं वा आर्यों के आलस्य प्रमाद के कारण लुप्त प्रायः हो चुकी थीं। उनके जीवन काल में वेदों की मुद्रित मन्त्र संहितायें व सायण आदि भाष्य आदि देश भर में कहीं उपलब्ध नहीं होते थे। सायण ने जो मन्त्र भाष्य किया वह भी प्राचीन वेद परम्परा व अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त पद्धति के अनुरुप व उनसे पोषित नहीं था। उन्होंने सभी वेद मन्त्रों का प्रयोजन यज्ञार्थ बताकर उनके याज्ञिक अर्थ ही किये थे। इसके विपरीत महर्षि दयानंद अपने समय व महाभारत काल के बाद पहले विद्वान थे जिन्होंने चुनौती के स्वरों में घोषणा की थी कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। अपनी इस मान्यता को वेदों का भाष्य आरम्भ करने से पूर्व उन्होंने चारों वेदों की भूमिका के रूप में लिखी पुस्तक 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' में प्रमाणों के साथ प्रस्तुत किया है। महर्षि दयानन्द ने चारों वेदों के भाष्यों के लेखन का उपक्रम आरम्भ किया था। यदि उनके विरोधियों ने उन्हें विष देकर मारा न होता तो वह चारों वेदों का अपूर्व भाष्य करते। सारे देश में घूम-घूम कर वेदों का प्रचार, प्रतिपक्षियों से शास्त्रार्थ व वार्तालाप व अन्य अनेक ग्रन्थों का लेखन, आर्यसमाजों की स्थापना, गोरक्षा आन्दोलन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन आदि कार्यो को करते हुए भी उन्होंने यजुर्वेद का सम्पूर्ण और ऋग्वेद के कुल 10 मण्डलों में से 6 मण्डलों का पूर्ण और सातवे मण्डल का आंशिक भाष्य किया है। उनके द्वारा किया गया भाष्य आकार व परिमाण की दृष्टि से समस्त चार वेदों का 33 प्रतिशत से कुछ अधिक है। वेदों का यह भाष्य संस्कृत व हिन्दी दोनों में है। सभी मन्त्रों के ऋषि व देवताओं सहित स्वर व छन्द भी दिये गये हैं और मन्त्रों का पदच्छेद, अन्वय, पदों के संस्कृत व हिन्दी में अर्थ सहित इन दोनों भाषाओं में प्रत्येक मन्त्र का भावार्थ भी दिया गया है। मण्डल, सूक्त आदि के अन्त में पूर्व के सूक्त की बाद के सूक्त के साथ संगति कैसे लगती है, यह भी दर्शायी गई है। कई स्थलों पर सायण भाष्य की न्यूनता व त्रुटियों को बताया गया है। इस प्रकार से महर्षि दयानन्द द्वारा किया गया भाष्य संसार के इतिहास में अपूर्व व महत्ता में सर्वोपरि उत्कृष्ट है।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित से ज्ञात होता है कि उन्होंने चारों वेदों के प्रत्येक मन्त्र को जाना व समझा था तभी वह वेदों पर अनेक घोषणायें कर सके थे जिनमें चारों वेदों में मूर्तिपूजा का विधान कहीं नहीं है, घोषणा भी सम्मिति है। उनकी इस चुनौती को देश भर के बड़े से बड़े किसी पण्डित ने स्वीकार नहीं किया और काशी में इस विषय में जो शास्त्रार्थ हुआ उसमें भी पूरी काशी व देश के शीर्ष पण्डित वेदों में मूर्तिपूजा का विधायी एक मन्त्र भी नहीं दिखा पाये थे और न ही उस शास्त्रार्थ के 14 वर्ष बाद तक उनके जीवन काल में व आज तक दिखा सके हैं। इस प्रकार से महर्षि दयानन्द चारों वेदों के मन्त्रों के अर्थों के द्रष्टा वा विद्वान थे। इस कारण उनको न केवल ऋषि=वदों के मन्त्रों के अर्थों के द्रष्टा ही अपितु अपूर्व ऋषि व महर्षि भी कह सकते हैं। भारत में वेदों का पहली बार मुद्रण उन्हीं के प्रयासों से हुआ जो उनका इतिहास में अन्यतम कार्य है। अतः स्वामी दयानन्द सच्चे व अपूर्व ऋषि सिद्ध होने के साथ चारों वेदों के ज्ञाता व व्याख्याता की दक्षता रखने के कारण महर्षि भी सिद्ध होते हैं।

मनुष्यों को शिक्षा व ज्ञान देने वाले को गुरु कहते हैं। संसार की आदि से अब तक विभिन्न विषयों के असंख्य गुरु हो चुके हैं जिनका संकेत, विवरण व कुछ इतिहास रामायण व महाभारत सहित अनेक ग्रन्थों में दृष्टिगोचर होता है। महाभारत काल के बाद भी यह क्रम जारी है परन्तु महाभारत काल के बाद हम देखते हैं कि धर्म में अनेक विकृतियां आईं। ईश्वर की आज्ञा के पालनार्थ किये जाने वाले यज्ञों में मूक पशुओं की हिंसा का क्रम जारी हुआ व बढ़ता रहा। सामाजिक विषमता व अनेक कुरीतियां प्रचलित हुई जिनका आधार अज्ञान व अन्धविश्वास थे जो अज्ञान व अविद्या से ही उत्पन्न होते हैं। उस समय में ऐसे किसी सुधारक का विवरण नहीं मिलता जिसने यज्ञों में हिंसा सहित अज्ञान, अन्धविश्वास तथा कुरीतियां का पूर्ण निवारण करने का बीड़ा उठाया हो और इन समस्याओं के सत्य समाधान प्रस्तुत किये हों। वेदों के सत्य अर्थों को तो इस अवधि में विलुप्त हुआ ही पाते हैं। महात्मा बुद्ध ने अवश्य यज्ञों में पशु हिंसा का विरोध किया परन्तु यह हिंसा जिस अज्ञान व स्वार्थ आदि के कारण अस्तित्व में आई थी उसका कोई समाधान नहीं किया। वेदों के सत्य अर्थ भी हमें उनसे नहीं मिलें। हम जानते हैं कि दूषित जल पीने योग्य नहीं होता परन्तु उसे छान कर, अशुद्धियों को हटाकर स्वच्छ व निर्मल बनाकर प्रयोग में लाया जा सकता है। यही विधि ग्राह्य होती है। यज्ञों का विरोध करने से यथार्थ हिंसारहित यज्ञों से होने वाले लाभों से भी मनुष्य समाज वंचित हो गया। नास्तिकता को बढ़ावा मिला। ईश्वर की यथार्थ उपासना भी विकृत वा बन्द हो गई। यह हमें कोई समाधान नहीं लगता। बाद में स्वामी शंकराचार्यजी हुए। वह विद्या की दृष्टि से महाभारत काल के बाद सर्वाधिक योग्य व शीर्ष स्थान पर थे। उन्हें समाज से ईश्वर की अवहेलना करने वाले नास्तिक मतों को हटा कर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के साथ वैदिक धर्म को प्रवृत्त करना था। परन्तु उन्होंने जिस अद्वैतवाद का सिद्धान्त दिया, वह उनसे पूर्व के इतिहासादि, वेद, दर्शन व उपनिषदों में कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। वेद से लेकर महाभारत काल व उसके बाद के साहित्य में सर्वत्र त्रैतवाद अर्थात् ईश्वर, जीव व प्रकृति की पृथक-पृथक सत्ता का वाद ही प्रचलित पाया जाता है जो कि पूर्णतया व्यवहारिक एवं यथार्थ है।

आज का सारा संसार सृष्टि के अस्तित्व व महत्व को स्वीकार करता है। यह संसार व इसके दिन प्रतिदिन होने वाले आविष्कार एवं घटनायें स्वप्नवत न होकर वास्तविक व यथार्थ हैं। भारत में रेलें चलती हैं और हम उनका उपयोग करते हैं, यह स्वप्नवत नहीं, हकीकत व यथार्थ हैं। स्वामी शंकराचार्य जी के बाद जो मत देश व विदेश में उत्पन्न हुए वह एंकागीं व अपूर्ण थे। उनमें यदि बहुत सी बातें अच्छी, सत्य व उचित थी तो बहुत सी अज्ञान व अन्धविश्वासों से युक्त अविवेकपूर्ण भी हैं। अतः अज्ञान, अन्धविश्वास व अविवेकपूर्ण बातों को मानने वाले व प्रचार करने वाले सच्चे व सर्वोच्च गुरु की उपमा व उपाधि से अभिहित नहीं कहे जा सकते। महर्षि दयानन्द महाभारत काल के बाद इतिहास में पहले महापुरुष हुए हैं जिन्होंने सत्य की कसौटी को पकड़ा और चाहे ईश्वर का अस्तित्व व उसकी उपासना हो या कुछ अन्य भी, सभी को सत्य की कसौटी पर कसा और उसका ऐसा प्रचार किया जिसकी इतिहास में दूसरी मिसाल नहीं है। उन्होंने सभी मतों के अज्ञान, अन्धविश्वासों व मिथ्याचारों पर दृष्टि डाली और उन्हें मनुष्यजाति के सुख शान्ति के लिए हानिकर जानकर उसके निवारण का अपूर्व प्रयास व पुरुषार्थ किया। ऐसा करने में उनका अपना कोई निजी प्रयोजन, हित व स्वार्थ नहीं अपितु केवल ईश्वर की आज्ञा का पालन व लोकोपकार की भावना ही थी। महर्षि दयानन्द ज्ञान की दृष्टि से महाभारत काल के बाद उत्पन्न हुए सर्वोच्च व शीर्ष पुरुष तो थे ही, उन्होंने वेद की सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों के लेखन व मौखिक प्रचार का भी कीर्तिमान स्थापित किया है। इसके लिए उन्होंने कितने कष्ट सहे, इसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। वह शायद इतिहास में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने संसार से धार्मिक व सामाजिक अज्ञान, अन्धविश्वास, अन्याय, शोषण, उत्पीड़न को दूर कर ईश्वर की सच्ची उपासना, यज्ञ के सत्य स्वरुप का प्रचार व उसके क्रियात्मक पक्ष की विधि आदि का निर्माण व प्रचार किया। उनके द्वारा किए गये एक नही ऐसे अनेकानेक काम हैं जिस पर बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। मानवता की सेवा व सुधार का उन्होंने अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसके कारण हम स्वामी दयानन्द को विश्व का सर्वोच्च गुरु पाते है। ऐसा करके हम किसी अन्य गुरु की अवहेलना नहीं कर रहे हैं। अन्य सभी गुरु भी देश काल व परिस्थिति के अनुसार महान थे व हो सकते हैं परन्तु महर्षि दयानन्द का कार्य अन्यों की तुलना में अधिक महान व समाज सुधार व श्रेष्ठ समाज के निर्माण की दृष्टि से अतुलनीय है।

स्वामी दयानन्द मुत्यु के उपाय व सत्य की खोज में अपनी आयु के बाईसवें वर्ष में घर से निकले थे। पूरे देश का भ्रमण कर उन्हें मिले सभी गुरुओं की संगति व सेवा कर तथा अपनी अपूर्व बौद्धिक क्षमताओं से उन्होंने अपूर्व ज्ञान व वैदुष्य प्राप्त किया था। योग में वह सिद्ध योगी बने और ज्ञान की पराकाष्ठा को उन्होंने संस्कृत भाषा की आर्ष व्याकरण, उपनिषदों, दर्शनों, वेदांगों व वेद के ज्ञान सहित दण्डी गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती के शिष्यत्व से प्राप्त किया। स्वामी दयानन्द के अनेक गुरुओं में स्वामी विरजानन्द सरस्वती उनके सर्वोच्च गुरु थे। उनकी प्रेरणा व आज्ञा से व अपने विवेक से उन्होंने अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियां, सामाजिक असमानता व विषमता, देश सुधार व देशोन्नति का कोई कार्य छोड़ा नहीं अपितु सभी कार्यों को प्राणपन से किया। इन सब कार्यों का आधार उनका वैदिक ज्ञान था। सभी सुधारों का सुधार वेदाध्ययन, वेदाचारण व वेद प्रचार ही है। स्वामी दयानन्द ने वेद प्रचार के लिए ही मुख्यतः सर्वाधिक प्रयत्न किये। उनके मौखिक प्रचार के अतिरिक्त वेदों का भाष्य, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं संस्कारविधि आदि अन्यान्य ग्रन्थ वेद प्रचार के ही अंग-प्रत्यंग हैं। वह महाभारत काल के बाद अपूर्व वेद प्रचारक हुए हैं। ऐसा वेद प्रचारक सृष्टि की आदि से वर्तमान युग तक होने का वर्णन नहीं मिलता और न हि अनुमान ही होता है। उनका वेद प्रचार का कार्य संसार के कल्याण की दृष्टि से सर्वोत्तम कार्य है। मनुष्य जीवन में वेद प्रचार का कार्य करना एक प्रकार से ईश्वर का ही कार्य व साधना है। अपने कल्याण की इच्छा करने वाले सभी मनुष्यों को वैदिक साधना के साथ वेदाध्ययन व वेद प्रचार को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाना चाहिये। सभी सरकारों को योग्य वेद प्रचारकों को सर्वाधिक सम्मान व उनकी आर्थिक आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिये। देश व संसार में जितना अधिक वेदप्रचार होगा, जिसकी दशा व दिशा महर्षि दयानन्द अपने जीवन के उदाहरण से निर्धारित कर चुके हैं, उतना ही मानवता का हित होगा। यह कार्य ईश्वर का कार्य होने के साथ मानव जाति की समग्र उन्नति व सुख शान्ति का कार्य है। इसको समाज में मुख्य स्थान मिलना चाहिये। लेख को विराम देते हुए हम आशा करते हैं पाठक लेख को पसन्द करेंगे।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोनः 09412985121

आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी व स्वामी धर्ममुनि जी का अभिनन्दन

दिल्ली आर्य महासम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, स्वामी आर्यवेश जी, डा. धर्मपाल आर्य, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी चन्द्रवेश जी व स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी। द्वितीय चित्र –स्वामी धर्ममुनि जी का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, स्वामी आर्यवेश जी, महेन्द्र भाई व वेदप्रकाश आर्य।

आर्य महासम्मेलन का मन्च व आर्य वीर मॉडल स्कूल के बच्चों की भजन प्रस्तुति

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन करोल बाग, दिल्ली के मन्च पर स्वामी श्रद्धानन्द जी (पलवल),डा. अनिल आर्य, स्वामी आर्यवेश जी,स्वामी चन्द्रवेश जी,आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य सन्तराम आर्य (रोहतक) व विजय आर्य (पंचकुला), द्वितीय चित्र–आर्य वीर मॉडल स्कूल बादली, दिल्ली के बच्चे भजन प्रस्तुत करते हुए, प्रधानाचार्य उर्मिला मनचन्दा व प्रबन्धक महेन्द्र मनचन्दा को बधाई।

स्वतन्त्र कुकरेजा–वीरेन्द्र योगाचार्य व अरूण आर्य–सौरभ गुप्ता का अभिनन्दन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रान्तीय अध्यक्ष स्वतन्त्र कुकरेजा व प्रान्तीय महामन्त्री वीरेन्द्र योगाचार्य का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य व चौ.लाजपतराय आर्य (करनाल)। द्वितीय चित्र–परिषद् के दिल्ली प्रदेश के महामन्त्री अरूण आर्य व व्यायाम शिक्षक सौरभ गुप्ता का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,गोबिन्दसिंह भण्डारी (बागेश्वर) ,पूर्व महापौर महेश शर्मा,प्रदीप आर्य(शिक्षक)।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के सभी शुभचिन्तकों से अपील

जैसा कि आप को विदित ही है कि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की प्रथम ईकाई की स्थापना 3 जून 1978 को आर्य समाज, हड़सन लाईन, गुरु तेग बहादुर नगर, दिल्ली–110009 में श्री अनिल आर्य जी के कर कमलों द्वारा हुई थी।

उनके कुशल नेतृत्व व मार्ग दर्शन में गत् 37 वर्षो से आर्य समाज के क्षेत्र में देश भर में एक नयी क्रान्ति का सूत्रपात हुआ तथा ''जहां नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम'' के सफल व प्रेरक उद्घोष को सार्थक करते हुए युवा निर्माण हेतु अनेकों चरित्र निर्माण शिविरों, 251 कुण्डीय विराट् यज्ञ, शोभा यात्रायें, आर्य महासम्मेलन, संगीत संध्याओं, धरने–प्रदर्शन, युवा संस्कार अभियान आदि भव्यता पूर्वक व शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुए। जिससे अनेकों सभाओं ने भी प्रेरणा प्राप्त कर कार्य प्रारम्भ किये। जिससे आप सभी भली भांति परिचित हैं।

सम्मानीय अध्यक्ष जी को आर्य समाजों के अनेकों कार्यक्रमों में सम्मिलित होने हेतु दिल्ली व दिल्ली के बाहर भी एक–एक दिन में कई कार्यक्रमों में जाना होता है। अध्यक्ष जी को जो स्विफट कार परिषद् द्वारा दी गई थी, उसे 7वां वर्ष चल रहा है तथा वह लगभग 1 लाख 25000 किलोमीटर चल चुकी है।

अत: परिषद् की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक 12 दिसम्बर 2015 में स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में निश्चय हुआ है कि पूर्णतया समर्पित व्यक्तित्व, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य जी का अभिनन्दन करके उन्हें शीघ्र ही एक ''नयी कार'' आर्य जनता की ओर से भेंट की जाये।

अत: आप से अनुरोध है कि इस यज्ञ में आप भी अपनी आहूति अवश्य डालें। कृपया अपना सहयोग समस्त क्रॉस चैक/ड्राफ्ट ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली'' के नाम से (प्रचार वाहन खाता) में सहयोग राशि भिजवाने की कृपा करें। आप अपना सहयोग सीधे खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस कोड SBIN0001280 पर भी भेज सकते हैं, हमें फोन: 9868002130 पर एस.एम.एस. कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। मैं इसके लिए आपका हार्दिक आभारी रहूँगां। आपके पूर्ण सहयोग की कामना के साथ।

महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महामन्त्री
सम्पर्क: 09013137070

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर जम्मु में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर जम्मु में 5 जून से 12 जून 2016 तक लगाया जायेगा। इच्छुक बालिकायें सम्पर्क करें–
सचिवः आरती खुराना–9910234595। –मृदुला चौहान, संचालिका

श्रद्धा मन्दिर स्कूल फरीदाबाद ने मनाया 25 वां स्थापना दिवस

शुकवार, 12 फरवरी 2016, श्रद्धा मन्दिर स्कूल, सैक्टर–87, फरीदाबाद ने अपना 25 वां स्थापना दिवस सोल्लास मनाया। चित्र में परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य को शाल व स्मृति चिन्ह से सम्मानित करते डा.गजराजसिंह आर्य व विजय कुमार आर्य। द्वितीय चित्र में विधायक विपुल गोयल का स्वागत करते राजेश कुमारी व पुष्पा आर्या। शिक्षाविद् अतुल कोठारी, मदनलाल तनेजा, वीरेन्द्र योगाचार्य, राकेश भार्गव, विद्याभूषण आर्य, विमला ग्रोवर, नन्दलाल कालरा आदि प्रबुद्धआर्य जन भी उपस्थित थे।

आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार का उत्सव व लोक सभा अध्यक्ष से भेंट

रविवार, 14 फरवरी 2016, आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार दिल्ली में वेद कथा का भव्य आयोजन किया गया। चित्र में–डा.अनिल आर्य का अभिनन्दन करते प्रधान धर्मपाल कुकरेजा, पी.एस.दहिया, ब्रह्मदत शारदा, सूरी जी, डा.उमेश कुलश्रेष्ठ। कुशल संचालन सुभाष मितल ने किया व मंत्री आनन्द कपूर ने आभार व्यक्त किया। द्वितीय चित्र में लोक सभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन को महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट करते परिषद के मध्य प्रदेश प्रान्तीय अध्यक्ष आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार व स्नेहलता हाण्डा।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित व ईश आर्य हिसार का स्वागत

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री का आर्य समाज,महावीर नगर,दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में स्वागत किया गया। चित्र में–पार्षद यशपाल आर्य, वेद प्रकाश, कन्हैयालाल मदान, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, दिनेश आर्य स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए। द्वितीय चित्र–हिसार के ईश कुमार आर्य का आर्य महासम्मेलन में अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, चौ.लाजपतराय आर्य व बलराज मलिक (जिला अध्यक्ष हिसार)

प्रि. अन्जु महरोत्रा का अभिनन्दन व पं.रामनिवास आर्य (पानीपत) का स्वागत

आर्य महासम्मेलन दिल्ली में कालका पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्य प्रि.अन्जु महरोत्रा का अभिनन्दन करते उर्मिला आर्या व अनिता कुमार। द्वितीय चित्र–आर्य भजनोपदेशक पं. रामनिवास आर्य (पानीपत) का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,राष्ट्रीय कवि सारस्वतमोहन मनीषी,सत्यव्रत सामवेदी(जयपुर) व दुर्गेश आर्य।

23 मार्च को जन्तर मन्तर पहुंचो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में शहीद भगतसिंह, राजगुरू,सखदेव के बलिदान दिवस पर बुधवार, 23 मार्च 2016 को प्रातः 10 बजे से 1 बजे तक नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर ''राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आंतकवाद विरोधी दिवस'' मनाया जायेगा। सभी राष्ट्र भक्त नागरिक सादर आमन्त्रित है। –अनिल आर्य

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. कु. नीलेश, आयु 25 वर्ष (सुपुत्री रामसेवक आर्य, मोलडबन्द) का निधन।
2. श्री अशोक भाटिया (भ्राता सरोज भाटिया) का निधन।
3. श्री विनय पण्डित (फरीदाबाद) का निधन।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970